डॉ० कविता कुमारी सिंह

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
आर० एन० कॉलेज

तृतीय सेमेस्टर – चतुर्दश पत्र
विषय – प्रमुख आचार्य और काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय
का शेष भाग –

(5) वामन – इनका समय 800 ई० के आसपास है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' है। काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का यह पहला सूत्रबद्ध ग्रन्थ है। सूत्रों की वृत्ति भी स्वयं वामन ने लिखी है। वामन रीतिवादी आचार्य थे। इन्होंने रीति को काव्य की आत्मा माना है। इनके मतानुसार गुण-रीति के आश्रित है। गुण काव्य का नित्य अंग है और अलंक अनित्य अंग है। रस को इन्होंने 'कान्ति नामक गुण से अभिहित किया है। वामन पह आचार्य हैं जिन्होंने वक्रोक्ति को लक्षण पर्याय माना है और उसे अर्थालंकारों

S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F
4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31
Way To Do Great Work Is To Love What You Do. If You Haven't Found It Yet, Keep Looking. Don't Settle. – Steve Jo

में स्थान दिया है। उनके प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित है —

1. रीति को काव्य की आत्मा मानना। (रीतिरात्मा काव्यस्य)
2. गुण और अलंकार का पृथक्-पृथक् विवेचन तथा गुण को अलंकार की अपेक्षा अधिक महत्व।
3. वैदर्भी, गौड़ी तथा पंचाली — इन तीनों रीतियों की कल्पना
4. वक्रोक्ति को सादृश्य मूलक लक्षणा मानना।
5. समस्त अर्थालंकारों को उपमा मानना।

रुद्रट — रुद्रट कश्मीर के निवासी थे। इनका समय नवमी-शती का आरम्भ माना जाता है। इनके ग्रन्थ का नाम 'काव्यालंकार' है। यद्यपि रुद्रट अलंकारवादी युग के आचार्य हैं, किन्तु भरत के उपरान्त

रस का व्यवस्थित और स्वतंत्र निरूपण उनके ग्रन्थ में उपलब्ध है। नायक - नायिका भेद का विस्तृत निरूपण भी इन्होंने सर्वप्रथम किया। कुछ विद्वान इन्हें अलंकारवादी आचार्य मानते हैं, किन्तु अलंकार की अपेक्षा रस के प्रति इनका झुकाव अधिक है।

(7) आनन्दवर्धन — आनन्दवर्धन ने काव्यशास्त्र में 'ध्वनि सम्प्रदाय' की स्थापना की। इन ख्याति 'ध्वन्यालोक' नामक अमर ग्रंथ के का है। इन्होंने ध्वनि को काव्य की आत्मा माना यद्यपि इन्होंने रस को ध्वनि का ही भे माना है पर रस ध्वनि के प्रति अन्य भेदों की अपेक्षा इन्होंने अधिक समादर किया है।

" सहृदय हृदयाह्लादि शब्दार्थमयत्वमेव काव्य

(8) अभिनवगुप्त — इनका काव्यशास्त्र के साथ दर्शनशास्त्र पर भी समान अधि

यही कारण है कि काव्यशास्त्रीय विवेचन को इन्होंने उच्च स्तर पर ले गये। ध्वन्यलोक पर 'लोचन' और नाट्यशास्त्र पर 'अभिनव-भारती' नामक टीकाएँ इनके प्रमाण हैं। अभिनव गुप्त ने व्याकरण-शास्त्र, ध्वनि-शास्त्र और नाट्य-शास्त्र का अध्ययन क्रमशः नरसिंह गुप्त, भट्ट-इन्दुराज को गुरु मानकर किया। अभिनवगुप्त का 'अभिव्यक्तिवाद' रस सिद्धान्त में एक प्रौढ़ एवं व्यवस्थित वाद है। यद्यपि इस वाद का समय-समय पर खण्डन किया गया, किन्तु फिर भी यह अद्यावधि अचल बना हुआ है।

World Blood Donor D